11

सच्चे आराधक

क्या परमेश्वर उसकी आराधना के इच्छुक सब लोगों की आराधना स्वीकार करता है? हम कैसे कह सकते हैं कि हमारी धार्मिक अभिव्यक्तियां परमेश्वर को स्वीकार्य हैं?

यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर के प्रेम में बने रहना सशर्त है। ''यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसे कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं'' (यूहन्ना 15:10क)। परमेश्वर के विषय में दाऊद ने लिखा है, ''तुझे सब अनर्थकारियों से घृणा है'' (भजन संहिता 5:5ख)। यीशु के अनुसार परमेश्वर के प्रेम में बने रहना उससे प्रेम करने और उसकी आज्ञाओं को मानने पर निर्भर है। जो व्यक्ति यीशु की आज्ञाओं को नहीं मानता वह उसके प्रेम में बना नहीं रहता और परमेश्वर अनर्थ कार्यों से घृणा करता है, निश्चय ही इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर स्वीकार नहीं करेगा।

दुष्टों को शैतान की संतान माना जाता है (यूहन्ना 8:44)। यूहन्ना ने कहा कि कैन ''उस दुष्ट से था'' (1 यूहन्ना 3:12क)। स्पष्टतया परमेश्वर उनकी आराधना को सम्मान नहीं देगा जो दुष्ट की संतान है।

यह तथ्य कि परमेश्वर ने कैन और उसकी भेंट को ठुकराया (उत्पत्ति 4:4, 5)। इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर न तो सब लोगों को स्वीकार करता है और न हर आराधना को। संसार की लगभग हर सभ्यता ने किसी न किसी वस्तु या व्यक्ति की आराधना की। इस्राएल के आस-पास की जातियां अपने देवताओं की उपासना करती थीं। परमेश्वर ने न तो उन्हें और न उनकी आराधना को स्वीकार किया। जब इस्राएली लोग दुष्ट जीवन बिताने लगे तो उसने उनकी आराधना को स्वीकार नहीं किया। उनके अधर्म के कारण परमेश्वर ने उनकी आराधना से ''घृणा की'' और उन्हें ठुकरा दिया (आमोस 5:21-24)।

परमेश्वर केवल आराधना ही नहीं चाहता। हमारी आराधना के स्वीकार्य होने के लिए दो बातें आवश्यक हैं: (1) हम उसकी इच्छा के अनुसार आराधना करें, और (2) हम ऐसे लोग हों जिन्हें वह स्वीकार करे। हमने देखा है कि परमेश्वर की हमारी आराधना आत्मा और सच्चाई से होनी आवश्यक है (यूहन्ना 4:23, 24)। आगे हम देखेंगे कि परमेश्वर कैसे आराधक को स्वीकार करता है।

जो परमेश्वर की संतान हैं

परमेश्वर के पुत्र और दुष्ट अर्थात शैतान के पुत्र, बाइबल में केवल दो ही वर्ग के लोग हैं, जिनका उल्लेख किया गया है (मत्ती 13:38; 1 यूहन्ना 3:8, 10)। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर हमारी आराधना को स्वीकार कर लेगा यदि हम उसकी धर्मी संतान में हों जिन्हें यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध किया गया है और जो आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करते हैं।

यीशु ने हमारे लिए परमेश्वर के पुत्र होना और उसकी मृत्यु तथा जी उठने के द्वारा शुद्ध होना सम्भव बना दिया है (कुलुस्सियों 1:21-23; 1 पतरस 1:3, 4)। परमेश्वर की संतान बनने के लिए हमें यीशु की सुनना आवश्यक है, जैसे यीशु के रूपांतर के समय पिता ने कहा था (मत्ती 17:5)। वरना हम नष्ट हो जाएंगे (प्रेरितों 3:23)। हमारा विश्वास उसके लहू में होना आवश्यक है (रोमियों 3:25)। यदि हम सचमुच में उसमें विश्वास करते और अपने पापों से मन फिराते हैं तो हमें प्रभु में उसकी सेवा करने का निश्चय करना (प्रेरितों 3:19), उसमें अपने विश्वास का अंगीकार करना (रोमियों 10:9, 10) और बपतिस्मा लेना आवश्यक है ताकि हमारे पाप क्षमा किए जाएं (प्रेरितों 2:38)। ये बातें करने पर हमें नया जन्म दिया जाता है (यूहन्ना 3:3-5) और हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं (गलातियों 3:26, 27)।

जो वचन को सुनते हैं

यीशु के आश्चर्यकर्मों को लिखने का यूहन्ना का एक उद्देश्य यह था कि उसके बारे में पढ़ने से हम उसमें विश्वास लाएं और वह हमें अनन्त जीवन दे (यूहन्ना 20:30, 31)। पतरस ने यहूदियों को यह विश्वास दिलाने के लिए कि यीशु ही मसीह है यीशु के आश्चर्यकर्मों के बारे में बताया (प्रेरितों 2:22, 36)। जब उन्होंने पतरस से प्रचार सुना तो उनके हृदय छिद गये तो उन्होंने जानना चाहा कि उद्धार पाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। कुरनेलियुस को पतरस को बुलाने के लिए कहा गया, जिसने उसे ऐसी बातें बतानी थीं जिनसे उसने और उसके घराने के लोगों ने उद्धार पाना था (प्रेरितों 11:13, 14; प्रेरितों 10:47, 48 के साथ माना जाए)। पतरस ने लिखा कि हमारा नया जन्म परमेश्वर के वचन के द्वारा होता है। वचन का लाभ केवल उन्हें ही हो सकता है जो सुनकर, विश्वास लाते और इसे मानते हैं।

जो यीशु की बात नहीं सुनते और सुसमाचार को नहीं मानते उनका नाश होगा (2 थिस्सलुनीकियों 1:8)। यह सत्य है क्योंकि सुसमाचार उन्हें जो इसे ग्रहण करते और पकड़े रखते हैं (1 कुरिन्थियों 15:1, 2) बचाने के लिए परमेश्वर की सामर्थ है (रोमियों 1:16)।

जो उसमें विश्वास लाते हैं

यदि हम यीशु में विश्वास नहीं लाते, तो हम अपने पापों में मरेंगे (यूहन्ना 8:24)। यीशु में विश्वास करना अनन्त जीवन का आधार है (यूहन्ना 3:16)। परन्तु हमारे विश्वास को प्रतिफल तब तक नहीं मिलता जब तक हम परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा नहीं करते (इब्रानियों 11:6)। यूहन्ना ने लिखा, ''जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है'' (यूहन्ना 3:36)। जिस विश्वास को परमेश्वर स्वीकार करता है यह वह विश्वास है जो हमें आज्ञापालन के लिए प्रेरित करता है (याकूब 2:18, 20, 24, 26)। यीशु ''अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदाकाल के उद्धार का कारण'' है (इब्रानियों 5:9ख)।

जो उसकी सेवा करने का निश्चय करते हैं

क्षमा पाने के लिए हमारे लिए मन फिराव आवश्यक है (प्रेरितों 2:38; 3:19)। मन फिराव

केवल यह खेद जताना नहीं है कि हमने गलती की है। ''क्योंकि परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है, जिसका परिणाम उद्धार है और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता। परन्तु शारीरिक शोक मृत्यु उत्पन्न करता है'' (2 कुरिन्थियों 7:10)। जिन्हें ''मन फिराने'' और ''प्रार्थना करने'' पर क्षमा किया जाता है (प्रेरितों 8:18-22) वे लोग वे हैं जिन्होंने बपतिस्मा ले लिया है (प्रेरितों 8:13)। गैर मसीही लोगों को क्षमा पाने के लिए प्रार्थना करने के लिए कहीं नहीं कहा गया है।

मन फिराव या पश्चात्ताप प्रार्थना नहीं है। यह तो दिल से यह निश्चय करना है कि पाप से मुड़कर परमेश्वर की सेवा करें। हमें उन अपवित्र कामों के लिए जो हमने किए हैं मन फिराना आवश्यक है (प्रेरितों 8:22; प्रकाशितवाक्य 2:21, 22; 9:20, 21; 16:10, 11)। मन फिराव के बाद अपने जीवनों को परमेश्वर की सेवा के लिए मोड़ना आवश्यक है (मत्ती 3:8; 26:20; प्रकाशितवाक्य 2:5)।

जो मन नहीं फिराते वे नष्ट हो जाएंगे (2 पतरस 3:9)। जो मन फिराते अर्थात बदल जाते और बपतिस्मा लेते हैं, उन्हें क्षमा किया जाएगा।

जो यीशु में विश्वास का अंगीकार करते हैं

उद्धार पाने के लिए प्रभु के रूप में यीशु का अंगीकार करना आवश्यक है:

> ... यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है (रोमियों 10:9, 10)।

जो अंगीकार हमें करना है वह यह है कि यीशु ही मसीह है (प्रेरितों 8:37)। यह अंगीकार पापों को मानना या पापों का अंगीकार नहीं और न ही क्षमा के लिए प्रार्थना है। हमारे लिए उद्धार पाने के लिए आवश्यक प्रार्थना नहीं है।

यहूदियों के पर्व पिन्तेकुस्त के आरम्भ में, पतरस ने योएल 2:32क से उद्धृत किया था: ''और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा'' (प्रेरितों के काम 2:21)। पतरस ने ''और जो कोई प्रभु का नाम लेगा'' की व्याख्या यह अर्थ निकालने के लिए नहीं की कि ''जो कोई प्रार्थना करेगा।'' जब इन लोगों ने पूछा कि उद्धार पाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए (प्रेरितों 2:37), तो पतरस ने उन्हें प्रार्थना करने के लिए नहीं कहा। इसके बजाय उसने उन्हें बताया कि ''मन फिराओ और तुम में से हर कोई यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)।

यीशु ने शाऊल को जिसे पौलुस भी कहा जाता है (प्रेरितों 13:9) नगर में जाने को कहा जहां उसे बताया जाना था कि उसे क्या करना है (प्रेरितों 9:6)। दमिश्क में उसने तीन दिन उपवास रखा (प्रेरितों 9:9) और प्रार्थना की (प्रेरितों 9:11ख)। प्रभु द्वारा भेजे गए हनन्याह (प्रेरितों 9:10, 11) ने शाऊल से कहा, ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों के काम 22:16)। शाऊल को क्षमा पाने के लिए प्रार्थना करने को नहीं कहा गया था। उसे बपतिस्मे

में प्रभु का नाम पुकारने से क्षमा किया गया था। ''पुकारना'' (यू.: *epikaleo*) शब्द का अर्थ ''प्रार्थना करना'' नहीं है। इसका इस्तेमाल सुनवाई के लिए किया जाता है जैसे बाद में पौलुस ने कैसर की दुहाई दी (प्रेरितों 25:11, 12, 21, 25; 26:32; 28:19)। बपतिस्मा लेने के समय हम परमेश्वर के शुद्ध करने की दुहाई देते हैं (प्रेरितों 8:12; 19:5; देखें 2:38; 1 पतरस 3:21)। उद्धार के लिए यह अपील केवल यीशु के नाम में हो सकती है (प्रेरितों 4:11, 12)।

यदि हम प्रभु के रूप में यीशु का अंगीकार करते हैं, तो हमें अपने प्रभु के रूप में उसकी आज्ञा मानना आवश्यक है। उसने कहा, ''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?'' (लूका 6:46); ''जो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है'' (मत्ती 7:21)। किसी को भी यदि वह यीशु को प्रभु जानकर उसकी बात मानने को तैयार नहीं है उसे *प्रभु* कहने का अधिकार नहीं है।

यदि हम यीशु का अंगीकार नहीं करके उसका इनकार करते हैं, तो वह पिता के सामने हमारा इनकार करेगा (मत्ती 10:33)।

जो उसके साथ गाड़े गए और जिलाए गए हैं

जब हम यीशु से सीखकर उसमें विश्वास लाते हैं, उसके लिए जीने के लिए दृढ़ निश्चय से मन फिराते हैं, उसमें अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं कि हमें क्षमा किया जा सके, तो हमारे पाप धो डाले जाएंगे और हमारा उद्धार होगा (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21)। बपतिस्मा परमेश्वर की शर्तों में से एक है, जिन्हें उद्धार पाने से पहले हमारे लिए पूरा करना आवश्यक है।

बपतिस्मा कोई कर्म नहीं है, जिसके द्वारा हम अपने पापों से शुद्ध हो सकें क्योंकि हमारे पाप यीशु के लहू से धोए जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 1:5)। क्रूस पर उसके अपने आपको देने से उसने हमारे पापों का कर्ज़ चुका दिया (1 पतरस 1:18, 19)। ताकि हम धर्मी ठहर सकें (2 कुरिन्थियों 5:21)। उसने उसके द्वारा जो उसने किया हमारा उद्धार कमा लिया जिसमें उसने अपने आपको क्रूस पर मृत्यु के लिए दे दिया (फिलिप्पियों 2:8; इब्रानियों 5:8, 9)। इसी प्रकार हम बपतिस्मे में आज्ञा मानते हैं, ऐसे नहीं जैसे हम कुछ काम कर रहे हों बल्कि ऐसे जैसे हमारे लिए कुछ किया गया है। बपतिस्मा कुछ ऐसा है, जिसमें हम अपने आपको देते हैं।

बपतिस्मे में हमारी आत्मिक सर्जरी होती है, जिसमें हमारे पापपूर्ण अतीत को निकाल दिया जाता है (कुलुस्सियों 2:13, 14)। डॉक्टर यीशु यह ऑप्रेशन करता है। हम विश्वास से उसके आगे अपने आपको दे देते हैं कि वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार करे। बपतिस्मे में हम दूसरे के हाथ में अपने आपको ऐसे दे देते हैं जैसे यीशु ने क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय अपने आपको दूसरों के हाथों में दिया था।

बपतिस्मे में हम पाप के लिए मृत्यु में गाड़े जाते हैं और नया जीवन जीने के लिए मसीह के साथ जिलाए जाते हैं (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:12)। मरकुस 16:16 में ''यीशु ने बपतिस्मे को उद्धार के साथ जोड़ा, उद्धार दिलाने के साधन के रूप में नहीं बल्कि उद्धार पाने की शर्त के रूप में जोड़ा''[1] पतरस ने यही सच्चाई बताई।

''जहाज़ ... जिसमें बैठकर थोड़े अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए'' की बात करते हुए (1 पतरस 3:20) की बात करते हुए उसने कहा, ''उसी पानी का दृष्टांत भी अर्थात बपतिस्मा यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है; इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है'' (1 पतरस 3:21)।[2]

जल और आत्मा से जन्म लिए बिना हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते (यूहन्ना 3:5)। ''आत्मा'' ने सच्चाई दी है (यूहन्ना 16:13), वचन जो जीवन देता है (यूहन्ना 6:63; 1 पतरस 1:23) और हमें पाप से छुड़ाता है (यूहन्ना 8:32)। ''जल'' बपतिस्मे के पानी को कहा गया है (प्रेरितों 8:38, 39)।

''परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे'' (प्रेरितों 8:12)। फिलिप्पुस परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता था। जिसके परिणाम स्वरूप लोगों ने विश्वास करके बपतिस्मा लिया था। स्पष्टतया उन्होंने उस राज्य में प्रवेश करने के लिए फिलिप्पुस के प्रचार को मान लिया था। उन्होंने यीशु के बारे में फिलिप्पुस के संदेश पर विश्वास किया (प्रेरितों 8:5), जिसका प्रचार उसने आत्मा की सहायता से किया (प्रेरितों 6:3, 5) जो उसके द्वारा काम कर रहा था। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने बपतिस्मा लिया। इस प्रकार बपतिस्मा लेकर उन्होंने ''जल'' से जन्म पाया था। फिलिप्पुस के द्वारा आत्मा के काम करने के द्वारा आज्ञा मानने में अगुआई पाकर उन्होंने ''आत्मा'' से जन्म लिया था। फिलिप्पुस के प्रचार को मानने से उन्होंने परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया था।

सारांश

परमेश्वर हर किसी की आराधना को स्वीकार नहीं करता। हमारी आराधना के स्वीकार योग्य होने के लिए हमारे लिए उसकी संतान होना अर्थात अपने पापों से उद्धार पाना आवश्यक है। उसकी संतान हम तब बनते हैं जब विश्वास से मसीह में बपतिस्मा लेकर उसे पहन लेते हैं। उसकी संतान के लिए उसके द्वारा स्वीकार्य होने के लिए आत्मा और सच्चाई से आराधना करना आवश्यक है।

परमेश्वर की आराधना जीवन द्वारा की जा सकने वाली सबसे बड़ी पेशकश में से एक है। हमें यह पता होना आवश्यक है कि हमारी आराधना परमेश्वर के सामने स्वीकार्य है। हम जान सकते हैं कि वह हमारी आराधना स्वीकार करेगा यदि हम उसके विश्वास योग्य संतान हैं, जो उसके पास उसे भाते हुए ढंग से आते हैं।

टिप्पणियां

[1]ओवन डी. ऑल्ब्रट, *बैपटिज़्म ए रिस्पॉन्स ऑफ़ फ़ेथ* (डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट, पब्लिशिंग कं., 2000), 86. [2]वही, 88.